26

भारतीय समाज : आदिवासी, ग्रामीण और नगरीय

भारतीय समाज को मोटे रूप में तीन भागों में बांटा जाता है–आदिवासी समाज, ग्रामीण समाज और नगरीय समाज। इस विभाजन का आधार भौगोलिक पर्यावरण एवं सामाजिक-सांस्कृतिक लक्षण है। आदिवासी समाज अपेक्षित रूप से एक पृथक समाज है, जिसकी एक निश्चित संस्कृति-भाषा एवं धर्म है। आज के विश्व में आदिवासी अपेक्षित रूप से सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हैं। दूसरी ओर ग्रामीण समाज गाँवों का समाज है, जिनका आधार जाति और कृषि अर्थव्यवस्था है। नगरीय समाज गैर–कृषि धन्धों जैसे कि उद्योग एवं नौकरी है। इस विभिन्नता के होते हुए भी इन तीनों समाजों–आदिवासी, ग्रामीण और नगरीय में निरन्तर अन्तःक्रिया होती है तथा यह विभाजन कोई बंधा-बंधाया नहीं है। समाजशास्त्री इसे आदिवासी, ग्रामीण और नगरीय अन्तर्बंधन मानते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- आदिवासी समाज के लक्षणों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- आदिवासी समाजों में आने वाले परिवर्तन को जान सकेंगे;
- आदिवासियों की समस्याओं की पहचान और उनकी प्रगति के लिए चलायी गयी योजनाओं को जानेंगे:
- ग्रामीण समाज के लक्षणों की पहचान कर सकेंगे;
- ग्रामीण समुदायों में आने वाले परिवर्तन की व्याख्या करेंगे;
- नगरीय समाज के लक्षण तथा उसका अर्थ समझ सकेंगे; और
- नगरीय एवं ग्रामीण समाजों को जोड़ने वाले तत्वों की जानकारी प्राप्त करेंगे।

26.1 आदिवासी समाज

आदिवासी समाज की परिभाषा उस समुदाय से की जाती है, जो पहाड़ी व जंगल क्षेत्र की है। जिसकी अपनी संस्कृति, धर्म, भाषा, और नृजातीय पहचान होती है। मानवशास्त्री आदिवासी व्याख्या एक ऐसे सामाजिक समूह से करते हैं, जिसका एक निश्चित क्षेत्र में निवास पाया जाता है। जिसकी पहचान अन्तर्वैवाहिक होती है और जिसमें कोई विशिष्टीकरण नहीं होता। इस समूह पर आदिवासी मुखियाओं का राज चलता है। ये मुखिया वंशानुगत होते हैं।

आदिवासी समूह भाषा एवं बोली द्वारा जुड़े होते हैं। ये समूह सामाजिक दृष्टि से जातियों से भिन्न होते हैं। इनकी अपनी परम्पराएँ, विश्वास और रीति-रिवाज होते हैं और ये लोग अपनी नृजातीय एवं क्षेत्रीय एकता के बारे में जागरूक होते हैं।

26.1.1 आदिवासी समाज की विशेषताएँ

आदिवासी समाज की उपरोक्त परिभाषा के आधार पर इसके हम निम्न लक्षण पाते हैं:

(1) इनका एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र होता है।

(2) समान्यतया आदिवासी जंगलों तथा पहाड़ों में रहते हैं।

(3) दूसरे समूहों की तुलना में ये एक पृथक या अर्ध पृथक क्षेत्र में निवास करते हैं।

(4) इनकी अपनी संस्कृति, जनरीतियाँ, ब्रह्मविज्ञान और विश्वास व्यवस्था होती है।

(5) आर्थिक दृष्टि से ये आत्म निर्भर होते हैं। अर्थात ये जीविकोपार्जन करते हैं, एवं बाजार के लिए अतिरिक्त उत्पादन नहीं करते। इनकी तकनीकी आदिम होती है। इनकी अर्थव्यवस्था मुद्रा पर निर्भर नहीं होती। ये वस्तु-विनिमय करते हैं।

(6) इनकी रुचि वर्तमान की समस्याओं से होती है, वे भविष्य के बारे में नहीं सोचते।

(7) इनकी अपनी स्वयं की भाषा होती है, तथा इस भाषा की कोई लिपि नहीं होती।

(8) इनकी स्वयं की राजनीतिक व्यवस्था होती है। यह व्यवस्था राज्यहीन या राज्य दोनों की होती है। प्रारम्भ में आदिवासी समाज राज्यहीन समाज था। इसका मतलब हुआ, इस समाज में कोई राजा नहीं होता था। वे अपनी कानून व्यवस्था को परिवार और नातेदारी सम्बन्धों से चलाते थे। बाद में इस समाज में राज्य व्यवस्था आयी, जिसमें चुनाव द्वारा अपने राजा या मुखिया को मनोनीत करते थे। आज यह स्थिति बदल गयी है। वे स्वायत्ता को छोड़ चुके हैं और स्थानीय प्रशासन के अंग बन गये हैं।

(9) आज आदिवासी समाज को सरल समाज कहते हैं। यह इसलिए कि उनके

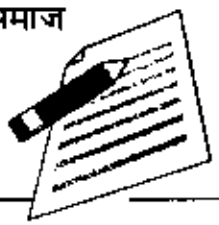

Notes

सामाजिक सम्बन्ध मुख्य रूप से परिवार और नातेदारी पर निर्भर है। इसके अलावा उनमें कोई कठोर सामाजिक स्तरीकरण नहीं होता।

(10) इनका अपना स्वयं का धर्म होता है। अर्थात इनका देवी-देवताओं पर विश्वास होता है। इनके धर्म का स्वरूप अत्मावाद होता है। ये अपने देवी-देवताओं और पूर्वजों की पूजा करते हैं। टोटमवाद के अन्तर्गत लोग पेड़ या किसी जानवर की तरह अपने पूर्वजों को अपना संस्थापक मानते हैं। उनका विश्वास प्रकृतिवाद में भी होता है एवं ये नदी-नाला, सूर्य, चन्द्र और जंगल की पूजा करते हैं।

पाठगत प्रश्न 26.1

कोष्ठक में दिये गये शब्दो से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

(1) आदिवासी समुदाय अधिकार.....में रहते हैं। (पहाड़, नगर, औद्योगिक)

(2) आदिवासियों की अर्थव्यवस्था.....स्तर पर होती हैं। (विकसित, विकासशील और आदिम)

(3) आदिवासियों का धर्म..... होता है। (स्वयं का, हिन्दू, इसाई)

(4) आदिवासियों का स्तरीकरण.....होता है। (गैर बराबरी गहन, थोड़ा सामान्य)

26.1.2 भारत में आदिवासी समुदाय

भारत में लगभग 461 आदिवासी समुदाय हैं, जो सारे देश में फैले हुए हैं। जनगणना 2001 के अनुसार इनकी जनसंख्या 8.1 प्रतिशत है। इनका वितरण पाँच क्षेत्रों में पाया जाता है:

सारणी 1.1 : *आदिवासियों का वितरण*

क्षेत्र	मुख्य जनजातियाँ
उत्तर पूर्व, सिविकम और हिमालय	नागा, मिजो, अदिलेप्जा, गद्दी, खासी, गारो, राजी, जयन्तिया, राजी, भूटिया और थारो।
पश्चिम क्षेत्र	सहेरिया, भील, गरासिया, रेबारी, डांग मीणा, वरली
मध्य क्षेत्र	मुण्डा, ओरॉं, संथाल, गोण्ड, हो, चेन्चू, भूमिज, बिरहोर, कोंध, सओरा, पोरोजा
दक्षिण क्षेत्र	इरूला, टोडा, बडागा, पेलियन, चोलानेका,
द्वीपों में रहने वाला समुदाय	ग्रेट अंडमान निवासी, जरावा, ओन्ज, सेंटिनेक्लोज शोम्पेन और निकारोर निवासी

अगर हम विभिन्न आदिवासियों की संख्या को देखें तब गोण्ड सबसे अधिक (8 लाख) संख्या में मिलते हैं। इनके बाद भील (7.5 लाख), संथाल (5 लाख), मीणा (2.2 लाख) और ओराँ (2 लाख)। इन जनजातियों में जरावा केवल 50, ओन्ज केवल 100, अण्डमान निवासी लगभग 150 और अरण्डा केवल 260 ।

26.1.3 भारत में आदिवासियों का भाषायी वर्गीकरण

अधिकांश आदिवासी गैर-आदिवासी भाषा समूह को बोलते हैं। ये भाषाएँ चार परिवारों की हैं: ऑस्ट्रो-एशिएटिक, टिबिटो-चीनी, द्रविड़ और इण्डो-यूरोपियन है।

सारणी 2.2 : *भाषाई आधार पर आदिवासियों का वितरण*

भाषाई परिवार	मुख्य आदिवासी भाषाएँ
आस्ट्रो-एशिएटिक	खासी, निकोबारी, संथाली, हो, मुण्डारी
टिबिटो-चीनी	भूटिया, लेप्चा, अबोर, मीरी, डाफला, गोरो, नागा, लुशाई
द्रविड़	कोरवा, बडागा, टोडा, कोटा, कुई, गोण्डी, मालेर, ओराँ
इण्डो-यूरोपियन	हाजोंग, भीली

पाठगत प्रश्न 26.2

निम्न प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए:

(1) भारत के पाँच प्रमुख आदिवासियों का नाम लिखिए?

---

(2) एक प्रमुख जनजाति का नाम बताइए जो द्रविड़, भाषा बोलती है।

---

(3) ओंगंज कहाँ पाये जाते हैं?

---

(4) पश्चिमी क्षेत्र की तीन जनजातियों के नाम बताइए।

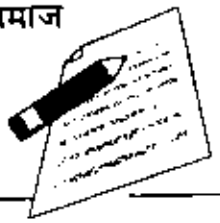

Notes

26.1.4 आदिवासी सामाजिक संरचना एवं स्तरीकरण

अधिकांश आदिवासी पितृवंशीय हैं। इन आदिवासियों में उड़ीसा के कोंध, पश्चिमी बंगाल एवं बिहार के संथाल और मध्य प्रदेश, गुजरात तथा राजस्थान के भील हैं। पितृवंशीय का आशय है, परिवार की सम्पत्ति पिता से पुत्र को मिलती है। निवास और वंशज परम्परा पिता से पुत्र को मिलता है। इन समाजों में पुरुष प्रभुत्व चलाता है। औद्योगिक अर्थव्यवस्था के अभाव में आदिवासी सामाजिक संख्या का आधार नातेदारी समूह जैसे कि गोत्र, वंशावली और परिवारों पर निर्भर है। कुछ आदिवासी समुदाय मातृवंशीय होते हैं, इनमें मेघालय के खासी और गारों हैं। प्रारम्भ में आदिवासी समूहों में स्तरीकरण नहीं था। इनमें दो समूह पाये जाते थे, वे शासक गोत्र और अन्य गोत्र। आर्थिक दृष्टि से इन आदिवासियों को समतामूलक समाज कहते हैं। गैर-आदिवासियों के सम्पर्क में आने के बाद इन समूहों में भी गैर-बराबरी देखने को मिली।

26.1.5 आदिवासी समस्याएँ

जब आदिवासी बाहरी समूहों के सम्पर्क में आये तब उनमें कुछ समस्याएँ आ गयी। मुस्लिम शासन के आने से पहले आदिवासी सामान्यतया समाज की मुख्य धारा से पृथक थे। मुस्लिम प्रशासन की प्रक्रिया में राज्य ने राजस्व ग्रहण करने की प्रक्रिया चलायी। मुस्लिम शासकों ने राजस्व तो लिया लेकिन आदिवासियों के रीति-रिवाजों और परम्पराओं में हस्तक्षेप नहीं किया। ब्रिटिश काल में आदिवासियों का शोषण प्रारंभ हुआ। यह मुख्य रूप से तीन कारणों से पाया गया:

(क) ब्रिटिश आदिवासियों पर शासन करना चाहते थे।

(ख) ब्रिटिश चाहते थे कि आदवासी क्षेत्र में जो आय के स्रोत हैं, उन्हें उनसे ले लिया जाय। सामान्यतया आय के स्रोत जैसे कि खनिज सम्पदा आदिवासी क्षेत्र में थी।

(ग) तर्क के बहाने ये लोग आदिवासियों को इसाई धर्म की शिक्षा देते थे।

सांस्कृतिक सम्बन्ध निम्नलिखित कारणों से आदिवासियों के सम्पर्क में आकर प्रारम्भ हुआ:

(क) आदिवासी क्षेत्र में खनिज सम्पदा की प्राप्ति होना।

(ख) आदिवासी क्षेत्र में प्रशंसकों और मिशनरियों का प्रवेश।

(ग) आदिवासी क्षेत्र में दवा-दारू करने वाले और बाहरी लोगों की उपस्थिति।

(घ) आदिवासी क्षेत्र में आवागमन और संचार के साधन जिन्होंने बाहरी लोगों को इस क्षेत्र में आने के लिए सुविधाएँ प्रदान की।

(ङ) बांध बनने, उद्योगों के विकास और सिंचाई साधनों के विकास के परिणामस्वरूप अदिवासियों का उनके क्षेत्र से विस्थापन।

इस प्रकार सांस्कृतिक सम्पर्क के कारण कई आदिवासी समस्याएँ पैदा हो गयी हैं। ये समस्याएँ निम्न हैं:

(1) **भूमि अलगाव:** भूमि अलगाव की समस्या मुद्रा अर्थव्यवस्था के आने के कारण पैदा हुई है। प्रत्येक उपभोग के साथ आदिवासी को धन की आवश्यकता पड़ी लेकिन कमाने का कोई और स्रोत उसके पास नहीं रहा, परिणामस्वरूप उन्होंने अपनी जमीन को गिरवी रखा या उसको बेच दिया। इसके अतिरिक्त बाहरी लोगों ने आदिवासियों का शोषण किया और उनसे जमीन हथिया ली। राज्य ने भी औद्योगीकरण के नाम पर जमीन को ले लिया। राज्य ने कई अधिनियम पारित करके जमीन के स्थानान्तरण या बिक्री को गैर-आदिवासियों के हाथों में पहुँचने से रोक दिया।

(2) **ऋणग्रस्तता:** आय के साधनों के अभाव में आदिवासियों की ऋणग्रस्तता बढ़ गयी। कई महाजनों और साहूकारों ने ऋण देकर गरीबी बढ़ा दी। इन महाजनों ने ऊँची ब्याज दर पर ऋण दिया। इस ऋण सुविधा के कारण आदिवासी शराब पीने लगे, शादी में स्त्रीधन या वधू मूल्य की रकम बढ़ गयी। इस उपभोग के कारण आदिवासी को धन की आवश्यकता पड़ी और इस कारण वह साहूकार के पास जाने लगा। इन प्रभावशाली कारणों से प्रेरित होकर राज्य सरकार ने साहूकारों को आदिवासी क्षेत्रों में पहुँचने से रोक दिया। राज्य ने बैंक और सहकारी सोसाइटी को प्रेरित किया कि वे अपेक्षित रूप से थोड़े ब्याज में आदिवासियों की सहायता करे।

(3) **बंधुआ मजदूर:** यह गंभीर समस्या है। इस समस्या का उद्‌गम नितान्त गरीबी और आय की निरन्तर होने वाली कमी है। देखा जाय तो भूमि अलगाव ऋणग्रस्तता, बंधुआ मजदूरी एवं गरीबी पारस्परिक रूप से जुड़े हुए हैं।

धन के अभाव में साहूकार आदिवासियों की जमीन को गिरवी रख लेता है और धन के न होने कारण आदिवासी कर्जा नहीं चुका पाता। इसका प्रभाव यह होता है कि वह बंधुआ मजदूर बन जाता है।

(4) **कृषि स्थानान्तरण:** आदिवासियों की बहुत बड़ी समस्या कृषि स्थानान्तरण है, इसे कई नामों से जानते हैं। उत्तर पूर्व में यह *झूम* कहलाती है। बिहार में इसे *खोलू* कहते हैं। उड़ीसा के *खोण्ड* और पराजन आदिवासियों में यह प्रथा *कोदू* नाम से जानी जाती है।

कृषि स्थानान्तरण का आशय जंगल और विशेष करके पहाड़ी क्षेत्र की जमीन को काट देना या खाली किये स्थान पर बीज को छिड़क देना होता है। इस तरह

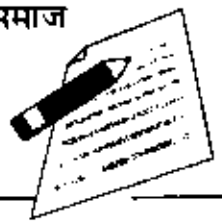

के खाली किये हुए भू-भाग पर अरहर, मक्का एवं बाजरे की खेती की जाती है। यहाँ हल से खेती नहीं की जाती, केवल बीज को छिड़क दिया जाता है। इस भाँति एक दो बार जंगल और पहाड़ की भूमि पर फसल की जाती है तथा पाँच-सात वर्षों बाद इस प्रक्रिया को दोहराया जाता है।

(5) **अशिक्षा:** आदिवासियों के विकास में सबसे बड़ी समस्या अशिक्षा की है। शिक्षा का विकास इस क्षेत्र में इसलिए रुक गया कि आदिवासी दुर्गम स्थानों पर रहते हैं। स्कूल में पढ़ाई का समय आर्थिक एवं कृषि उपार्जन के आड़े आता है। इन दोनों में मेल नहीं होता। इस कठिनाई को देखते हुए सरकार ने एक किलोमीटर की दूरी पर प्राथमिक स्कूल खोलने का प्रयास अवश्य किया है।

(6) **स्वास्थ्य और पोषण की समस्या:** स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव के कारण आदिवासियों का पर्याप्त पोषण नहीं होता। उनमें कई तरह की बीमारियाँ होती हैं। इन बीमारियों में प्रमुखतः मलेरिया और पीलिया हैं। इन बीमारियों का इलाज केवल प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और अस्पतालों में ही हो सकता है। प्रत्येक गाँव में स्वास्थ्य केन्द्र खोलने का प्रयास किया जा रहा है।

पाठगत प्रश्न 26.3

निम्न प्रश्नों के संक्षिप्त में उत्तर लिखिए:

(1) आदिवासियों में भूमि अलगाव का मुख्य कारण क्या है?

----

(2) कृषि स्थानान्तरण का अर्थ बताइए।

----

(3) आदिवासियों की औपचारिक शिक्षा में रुचि कम क्यों होती है?

----

(4) आदिवासियों में बंधुआ मजदूरी के क्या कारण हैं?

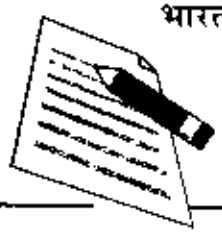

Notes

26.2 ग्रामीण समाज

ग्रामीण समाज का आशय उस समाज से हैं, जो गाँवों में रहता है और जो प्राकृतिक पर्यावरण पर निर्भर है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था मुख्यतया कृषि तथा उससे जुड़ी हुई गतिविधियों से संबद्ध है। गाँवों में जनसंख्या-घनत्व निम्न होता है और लोग मौखिक परम्परा के द्वारा अपने समूह में अन्त:क्रिया करते हैं ग्रामीण समुदायों में सांस्कृतिक एवं परम्परागत व्यवहार बहुत समृद्ध होता है। ऐसा होने पर भी इस समाज में आज के दृष्टिकोण में सामाजिक-आर्थिक विकास न्यूनतम होता है। ऐसी अवस्था में इन समाजों में सामाजिक-आर्थिक सुधार के लिए कई विकास कार्यक्रम किये जाते हैं।

26.2.1 ग्रामीण समाज की विशेषताएँ

(1) गाँवों में मुख्य व्यवसाय कृषि है। यह केवल ग्रामीण समुदाय के आय का स्रोत ही नहीं है अपितु यह ग्रामीणों की जीवन पद्धति भी है।

(2) ग्रामीण समुदाय आकार में छोटा होता है। अर्थात वे बहुत कम भौगोलिक क्षेत्र में छोटे समूह के निम्न घनत्व में रहते हैं।

(3) ग्रामीण समूह के लोग प्रत्यक्ष सम्पर्क करते हैं और इसलिए उनका व्यवहार आमने-सामने होता है।

(4) उनकी सामाजिक संरचना नातेदारी और परिवार के सदस्यों पर निर्भर है। इस समाज में वंश परम्परा बहुत महत्वपूर्ण होती है।

(5) सामान्यतया वे संयुक्त परिवार में रहते हैं। संयुक्त परिवार वह है, जिसके सदस्य एक ही छत के नीचे रहते हैं। एक ही चूल्हे से पके हुए खाने को खाते हैं। एक ही उपासना विधि को अपनाते हैं तथा जो कि नातेदारी के बंधनों से बंध होते हैं। एकाकी परिवार की तुलना में संयुक्त परिवार में पीढ़ियों की गहराई ज्यादा होती है।

(6) ग्रामीण समुदाय के लोग कर्मकाण्ड और रीति-रिवाज में अधिक रूढ़िगत होते हैं। देवी-देवताओं में उनका विश्वास अधिक होता है।

(7) ग्रामीणों में पारस्परिक सहयोग और समूहों की निकटता अधिक होती है। उनमें गहन भाईचारा होता है। कठिनाई के समय में यह समूह बड़ी आत्मीयता से मदद करता है।

(8) ग्रामीण समाज की संस्कृति, लोक-संस्कृति के नाम से जानी जाती है। उनकी संस्कृति रीति-रिवाजों, मानकों और कर्मकाण्ड से जुड़ी होती है। इसमें लिखाई-पढ़ाई का कोई स्थान नहीं होता। ये लोग एक ही सामान्य संस्कृति की पृष्ठभूमि में बड़े होते हैं, अत: जीवन के प्रति उनकी वैचारिकी में अन्तर नहीं होता। इस कारण उनका जीवन सजातीय होता है।

Notes

(9) परम्परागत रूप से ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि अर्थव्यवस्था है। कृषि करने की उनकी विधि परम्परागत है और ये सामान्यतया वर्ष में दो फसलें लेते हैं। फसल की इस पद्धति में उत्पादन कम होता है। फसलों को बाजार में बेचने की सुविधाएँ भी बहुत कम है। इस तरह की अर्थव्यवस्था के परिणामस्वरूप उनका जीवन गरीबी में निकलता है। इधर कुटीर उद्योगों के कमजोर होने से ग्रामीण पड़ौसी कस्बों में धन्धों के लिए जाने लगे हैं।

(10) भारत के गाँवों का बहुत बड़ा आधार कृषि व्यवस्था है। ये गाँव पवित्र एवं अपवित्र की अवधारणा पर काम करते हैं। उदाहरण के लिए, ब्राह्मण ग्रामीण सामाजिक संरचना में सबसे ऊँचा स्थान रखते हैं। इसका कारण यह है कि वे शिक्षा देने जैसे पवित्र धन्धों को करते हैं। गाँवों में दूसरी जातियाँ अशुद्र जातियाँ हैं। वे अशुद्र व्यवस्था को करते हैं। ये समूह परम्परागत व्यवसाय को अपनाते हैं।

(11) ग्रामीण समाज में आधुनिक जीवन पद्धति और विचारधारा को नहीं अपनाया जाता। वे अब भी अर्जित जीवन पद्धति को मानने वाले हैं, इसीलिए उनकी गतिशीलता बहुत सीमित है।

(12) ग्रामीण क्षेत्रों में विचलित व्यवहार को बड़ी सख्ती से लिया जाता है।

(13) कृषि की आधुनिक तकनीक अभी गाँवों में मजबूती से नहीं अपनायी जाती। लोग वर्षों पुराने विधियों को अब भी काम में लेते हैं। देखा जाय तो गाँवों के व्यवसाय आज भी कठोर श्रम पर निर्भर हैं।

(14) आज भी गाँवों की अर्थव्यवस्था आत्म निर्भर है, खासतौर से उत्पादन एवं उपभोग के क्षेत्र में।

(15) ग्रामीण अर्थव्यवस्था वस्तुतः एक स्थिर व्यवस्था है। यह इसलिए कि ये लोग आधुनिक तकनीकी कृषि नहीं करते, न उनके विनिमय की विधि और बाजार अर्थव्यवस्था आधुनिक है।

(16) ग्रामीण समाज के लोग परम्परावादी होते हैं। इसे समाजशास्त्र में लघु परम्परा कहते हैं। उनका अतीत के साथ गहन सम्बन्ध होता है।

पाठगत प्रश्न 26.4

कोष्ठक में से उपयुक्त शब्दों को चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

(1) ग्रामीण क्षेत्रों में ..... व्यवसायों की प्रधानता होती है। (कृषि, औद्योगिक व्यवसाय)

(2) गाँवों में ..... घनत्व निम्न होता है। (उच्च, निम्न, मध्यम,)

Notes

(3) ग्रामीण अर्थव्यवस्था.....होती है। (आदिम, विकसित)

(4) भारतीय गाँवों में..... व्यवस्था है। (जाति, वर्ग, जागीर)

26.2.2 भारतीय ग्रामीण समुदाय : एक सामाजिक इकाई के रूप में

ब्रिटिश प्रशासकों ने कहा है कि भारत के गाँव छोटे गणतन्त्र की तरह हैं। अर्थात ग्रामीण लोगों की जो आवश्यकताएँ हैं, वे उनके गाँव से ही पूरी हो जाती हैं। अपने अस्तित्व के लिए वे बाहर के लोगों पर निर्भर नहीं रहते। ब्रिटिश लोगों की यह मान्यता भारतीय समाजशास्त्रियों ने गाँवों के वैज्ञानिक अध्ययन के बाद गलत सिद्ध की है। हरियाणा के एक अध्ययन से सिद्ध है कि कोई 300 गाँव विवाह से जुड़े हुए हैं। उपभोग की कई वस्तुएँ जैसे कि नमक, मिठा तेल, कई औजार, कपड़ा, जवाहरात हर गाँव में पैदा होता हो ऐसा नहीं है। प्रत्येक गाँव में सभी प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध नहीं होती। अतीत में गाँव अलग-अलग राज्यों के अंग थे। इसके अलावा गाँव के लोग सम्पूर्ण देश में तीर्थ यात्री की तरह खींचे चले आते थे। उदाहरण के लिए, चार धाम की यात्रा गाँवों को दुनियाँ के साथ जोड़ देती है इसलिए हम यह नहीं कह सकते कि गाँव पृथक हैं। वास्तव में वे विशाल समाज के अंग हैं।

26.2.3 ग्रामीण समाज में परिवर्तन

आजादी के बाद सन् 1952 में सामुदायिक विकास कार्यक्रम गाँवों के सर्वांगीण विकास के लिए चलाए गये थे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य, सम्पूर्ण समुदाय का विकास में जुटना था। बाद में चलकर सन् 1959 में पंचायती राज अर्थात् स्थानीय प्रशासन चलाया गया। ये दोनों ही कार्यक्रम समानान्तर रूप से चलाए जाते हैं। सामुदायिक विकास कार्यक्रम को एकीकृत ग्रामीण विकास के स्थान पर रखकर इसे 1979 में शुरू किया गया।

ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों की अन्तःक्रिया बराबर चलती है। ग्रामीण, शहरी क्षेत्र में आता है तथा यहाँ के लोगों के साथ सम्पर्क करता है। इसी तरह शहरों के लोग गाँवों में जाते हैं। धीरे-धीरे, स्वाभाविक रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में शहरों का प्रभाव पड़ता है। कहा जाता है कि शहरों ने गाँवों के कुछ लक्षणों को अपना लिया है। गाँवों का कुछ कच्चा माल शहरों में पहुँचता है और इस तरह गाँव तथा शहर के बीच पारस्परिकता विकसित होती है, इसे ग्रामीण-शहरी नैरन्तर्य कहते हैं, इसका मतलब है गाँव और शहर में निरन्तरता बनी रहती है। इस निरन्तरता ने सड़कों के आवागमन के द्वारा सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन को प्रस्तुत किया है। जाति व्यवस्था कमजोर हो रही है तथा अब दोनों क्षेत्रों में अधिक गतिशीलता है। ग्रामीण क्षेत्र वस्तु-विनिमय को छोड़कर नकद बाजार व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है।

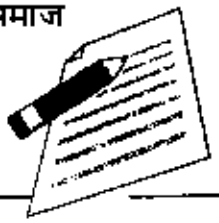

Notes

26.3 नगरीय समाज

नगरीय समाज में कस्बे, शहर और महानगर आते हैं। इनकी विशिष्ट जीवन पद्धति होती है। नगरीय समाज में जनसंख्या घनत्व अधिक होता है। अधिकतर लोग ऐसे धन्धों में लगे होते हैं, जो कृषि एवं पशुपालन के नहीं हैं। इन क्षेत्रों में निश्चित परिस्थितिकी और विभिन्न संस्कृति जो कि विशाल संस्कृति में होती है, पायी जाती है।

26.3.1 नगरीय समाज की विशेषताएँ

नगरीय समाज की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

(क) शहर व कस्बों में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक जनसंख्या घनत्व होता है।

(ख) शहरी क्षेत्रों में सांस्कृतिक विजातीयता अधिक होती है। इसका कारण है कि विभिन्न संस्कृतियों के लोग शहरों और कस्बों में रोजगार, शिक्षा, चिकित्सा और स्वास्थ्य के लिए आते हैं।

(ग) शहरों का पर्यावरण प्राकृतिक नहीं होता। यह पर्यावरण मनुष्य द्वारा बनाया गया विशिष्ट पर्यावरण होता है। नगरीय क्षेत्रों में व्यवसाय मुख्य रूप से गैर कृषि धन्धों जैसे व्यापार, वाणिज्य, प्रशासन आदि पर निर्भर होता है।

(घ) शहरी क्षेत्रों में अधिक सामाजिक गतिशीलता होती है। अर्थात यहाँ लोग विभिन्न वर्गों में पाये जाते हैं और उनका आधार आर्थिक होता है।

(ङ) शहरी क्षेत्रों में सामाजिक नियंत्रण अदालत, पुलिस एवं अन्य प्रकार्यात्मक संस्थाओं द्वारा होता है।

(च) शहरी क्षेत्रों में लोगों के बीच में अन्त:क्रिया द्वैतीयक सम्पर्क द्वारा होती है न कि प्राथमिक सम्पर्क द्वारा। इसका तात्पर्य यह है कि लोग पारस्परिक सम्बन्ध नहीं रख सकते।

(छ) शहरों में लोग शहरी जिन्दगी बिताते हैं। अर्थात लोगों में औपचारिक अन्त:क्रिया अवैयक्तिक व्यवहार, गैर-नातेदारी सम्बन्ध, सांस्कृतिक दिखावा होता है। उनके अवकाश का समय, क्लब, बाग-बगीचा उपहार गृह, सिनेमा, होटल आदि होते हैं।

(ज) शहरी आर्थिक संगठन बाजार और मौद्रिक अर्थव्यवस्था पर निर्भर है।

(झ) नगरीय सुविधाएँ जैसे कि सड़क, बिजली, पानी, संचार, बाग, होटल, सिनेमा आदि शहरी क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

(ञ) शहरी समाजों की विशेषता गुमनामी है, जैसे गाँव में लोग सबको जानते हैं वैसे शहरों में नहीं।

पाठगत प्रश्न 26.5

कोष्टक में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पुर्ति कीजिए:

(1) शहरी समाजों में अधिकतर लोगों का धन्धा..... होता है।
(कृषि पुरोहिती और गैर-कृषि)

(2) .....शहरी समाजों का महत्वपूर्ण लक्षण है।
(वैयक्तिक सम्बन्ध, गुमनामी और नातेदारी सम्बन्ध)

(3) नगरीय समाज की अर्थव्यवस्था..... होती है।
(मौद्रिक, कृषि, वस्तु विनिमय)

(4) शहरी क्षेत्रों में लोगों में सांस्कृतिक..... होती है।
(सजातीय, विजातीय, बहुलता)

26.3.2 भारत के नगरीय समुदाय

(क) शहरी क्षेत्र वह है, जिसमें प्रशासन की कोई इकाई जैसे कि नगरपालिका महानगर निगम, छावनी क्षेत्र आदि होते हैं।

(ख) एक ऐसा क्षेत्र शहरी कहलाता है, जिसमें 10,000 से अधिक जनसंख्या है।

(ग) वह क्षेत्र जिसमें 75 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या गैर-कृषि व्यवसायों में काम करते हों, शहर है।

(घ) वह क्षेत्र शहर है, जिसमें जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग मील 1000 व्यक्ति हो।

(ङ) वह क्षेत्र शहर है, जहाँ कुछ शहरी सुविधाएँ हों जैसे कि एक भौगोलिक क्षेत्र, एक विशाल आवासीय क्षेत्र हो तथा मनोरंजन और पर्यटन के महत्व की वस्तुएँ हों।

जनसंख्या के आधार पर यहाँ भारत में निम्न प्रकार के शहर हैं:

सारणी 8.3: *भारत में नगरों के प्रकार*

नामावली	जनसंख्या
महानगर	10,00,000+
श्रेणी I शहर	1,00,000+
श्रेणी II शहर	50,000+
श्रेणी III शहर	20,000+
श्रेणी IV शहर	10,000+

26.3.3 नगरीय सामाजिक समस्याएँ

शहरी समाज की कई सामाजिक समस्याएँ होती हैं जैसे कि भीड़भाड़ से लगी हुई जनसंख्या, गंदी बस्तियाँ, अपराध, स्रोतों एवं सुविधाओं का बहुत बड़ा अभाव जैसे कि पानी और बिजली। कुछ समस्याएँ शहरों में गुमनामी के कारण हैं। इन शहरों में वैयक्तिक सम्बन्ध देखने को नहीं मिलते। इस कारण शहरों में तनाव रहता है। देखा जाय तो शहरों में मानसिक बीमारियाँ अत्यधिक होती हैं। सभी लोग गाँवों से शहरों की ओर दौड़ते हैं। शहरों में बेरोजगारी अधिक होती है। जब शहर में रोजगार नहीं मिलता और गाँव से आदमी शहर में धकेल दिया जाता है, तब यह स्थिति बड़ी निराशाजनक होती है।

धकेलने वाली स्थिति का मतलब यह होता है कि गांवों में रोजगार न होने से बेरोजगारी की अवस्था ग्रामवासियों को नौकरियों की तलाश में शहरों की ओर धकेल देती है। खींचने की स्थिति का आशय यह है कि ग्रामवासयों को उनके शहरों में बसे हुए निकट के संबंधी लोग उन्हें काम दिलाने के लिए शहरों में आमंत्रित करते एवं बुला लेते हैं अथवा यों कहें कि खींच लेते हैं। फिर, इसके अलावा, नगरीय जीवन का मनोरंजक और आकर्षक पहलू भी लोगों को शहरों की ओर खींच लेता है।

गांवों से शहरों में विस्थापित होने पर लोगों को शहरों में रहने के लिए, सम्मानजनक आवास उपलब्ध नहीं हो पाते, सामान्यतः वे लोग शहरों की बाहरी सीमाओं में सामूहिक आवास बनाकर रहना शुरू कर देते हैं। ये सामूहिक आवास गंदी बस्तियों अर्थात् 'स्लमों' का स्वरूप धारण कर लेते हैं। कालान्तर में इन बस्तियों की दशाएँ बद से बदतर होती चली जाती हैं। शहरों में होने वाले अपराधों की संख्या बहुत ऊँची होती है। प्रमुख रूप से, शहरों में ऐसा बेरोजगारी के कारण नवयुवकों में व्याप्त निराशा एवं कुंठा तथा जनसंख्या की सघनता के कारण भी होता है।

पाठगत प्रश्न 26.2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए:

1. एक महानगर (मेट्रो) की कम से कम जनसंख्या क्या होती है?

....

2. नागरीय क्षेत्रों में कुछ लोगों को मानसिक समस्याएँ अथवा मानसिक रोग क्यों होते हैं?

.....

3. विस्थापन की ''धकेलने वाली'' स्थिति क्या होती है?

.....

4. नगरीय क्षेत्रों (शहरों) की बेरोजगारी का क्या कारण है?

.....

आपने क्या सीखा

- इस पाठ में आपने भात के आदिवासियों आदिम जातियों, तथा ग्रामीण और नगरीय समुदायों विशेषकर उनके सहआस्तित्व के संदर्भ में पढ़ा या सीखा है।
- वे तीनों समाज, भारत में, परस्पर मेलजोल वाले अन्तर्निर्भर और सहयोग पूर्वक रहते हुए पाए जाते हैं।
- नगरीय समाजों की अपेक्षा आदिवासी और ग्रामीण समाज अपेक्षाकृत आर्थिक रूप से पिछड़े हुए होते हैं।
- फिर भी, आर्थिक विकास की विभिन्न योजनाओं के द्वारा उनकी सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति में सुधार लाया जा रहा है।
- इन समाजों की संस्कृति नैसर्गिक वातावरण से पोषित होती हुई कुछ विशिष्ट तरह की होती है।
- नगरीय क्षेत्रों के लोगों में ग्रामीण क्षेत्रें के लोगों की अपेक्षा प्रायः सरलता (भोलेपन) और प्रदूषण रहित वातावरण का अभाव रहता है।
- अपनी विशिष्ट सभ्यता के कारण भारत के नगरों (शहरों) ने संपूर्ण देश के साथ-साथ विदेशों से भी लोगों को सर्वदा आकर्षित किया है।
- कुछ भी हो पर जनसंख्या की गहन सघनता, तथा ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोगों के द्वारा शहरों में विस्थापित होने के फलस्वरूप बेरोजगारी और गंदी बस्तियों (स्लमों) की अधिकता जैसी कुछ समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं।

Notes

पाठान्त प्रश्न

1. आदिवासी समाजों को सरल और भोले समाज क्यों कहा जाता है?
2. भारत की प्रमुख आदिवासी समस्याओं का वर्णन कीजिए।
3. भारत में एक नगरीय क्षेत्र के प्रमुख मानदंड क्या-क्या है?
4. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, भारत के ग्रामीण समाज में हुए परिवर्तनों को संक्षेप में लिखिए।
5. भारत की नगरीय सामाजिक समस्याओं का वर्णन संक्षेप में कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

26.1

(i) पहाड़ों (ii) पिछड़ी हुई

(iii) स्वयं का (iv) थोड़ा।

26.2

(i) भील (ii) गोंड (iii) संथाल, (iv) उरांव, (v) भिलाला

(ii) कोंद (खोंद)

(iii) अंडमान द्वीप समूह

(iv) मीना, रेबारी, डॉग

26.3

(i) मुद्रा संबंधी अर्थव्यवस्था

(ii) भूखंड के साफ करके एक चौरस भूमि में हल के द्वारा जुताई के बिना खेती करना।

(iii) क्योंकि पाठ्यक्रम और अध्ययन का समय उनकी संस्कृति और आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं होते।

(iv) धन का अभाव।

Notes

26.4

(i) कृषि

(ii) निम्न

(iii) कम विकसित।

(iv) जाति

26.5

(i) गैर-कृषि

(ii) गुमनामी

(iii) मौद्रिक